I) शीर्षकः- "संजीव के 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में चित्रित वन्यजीवनः-
स्वरूप एवं समस्याएँ"

II) प्रस्तावना (Introduction):-

भरतीय साहित्य में आजादी के लगभग दो-तीन दशकों के बाद आदिवासी साहित्य को लेकर अधिक चर्चा हो रही है । सदियों से उपेक्षित इस वर्ग की त्रासदी एवं विडंबना का चित्रण हिंदी साहित्य में भी मिलता है, जिसमें अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की छटपटाहट भी दिखाई देती है | हिंदी साहित्यकार चरित्र नायक के माध्यम से इसी छटपटाहट को व्यक्त कर तत्कालीन परिस्थितियों का वास्तव चित्रण करता है | ऐसे लेखकों में संजीव का नाम शीर्ष स्थान पर है | संजीव के अब तक धार, सावधान निचे आग है, किशनगढ के अहेरी, पॉव तले की दूब तथा जंगल जहाँ शुरू होता है आदि उपन्यासों के साथ साथ ऑपरेशन जोनाकी, प्रेरणास्त्रोत, टीस, तीस साल का सफरनामा, अपराध आदि कहानियॉ चर्चित रही है ।

संजीव ने अपने कहानी और उपन्यास साहित्य में मुख्यत: आदिवासी जन जातीयों की समस्याएँ एवं त्रासदीयों को चित्रित कर विकास की मुख्य धारा से कोसो दूर इस उपेक्षित वर्ग की मूल समस्याओं को अपने साहित्य के माध्यम से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है | संजीव केवल आदिवासीयों की समस्याओं का वर्णन नहीं करते बल्कि इन समस्याओं का निवारण करने के उपाय भी बताते हैं | उनके प्रत्येक कहानी या उपन्यास का नायक विद्रोही भूमिका अपनाता है| इस दृष्टि से भी संजीव का साहित्य अनुठा है । यूजीसी द्वारा प्राप्त लघू शोध परियोजना के अंतर्गत मैंने "संजीव के 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में चित्रित वन्यजीवनः स्वरूप एवं समस्याएँ" इस विषय का चयन कर जंगल एवं आदिवासी समुदाय के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । प्रस्तुत शोध परियोजना के माध्यम से मैंने सही मायने में आदिवासी जन-जीवन की त्रासदी एवं जीवनशैली को नजदिक से देखा है । 'जंगल जहां शुरू होता है' इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र कोई मनुष्य नहीं बल्कि जंगल ही है । क्योंकि उपन्यास का पूरा कथानक जंगल से ही शुरू होता है और वहीं समाप्त भी होता है ।

III) विषय चयन की प्रेरणाः-

मैं छात्रावस्ता से ही आदिवासी जन-जीवन पर आधारित साहित्य पढ़ते आया हूं । अध्यापन कार्य शुरू करने के पश्चात भी यह रूचि बनी रही । बी.ए. तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम में संजीव को पढ़ने-पढ़ाने का अवसर प्राप्त हुआ, तो उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अनेक पहलुओं से रूबरू हुआ । परिणामतः संजीव के 'जंगल जहां शुरू होता है' उपन्यास को पढ़ा और इस व्यक्ति के साहित्य को अनुसंधानात्मक पद्धति से पढ़ने की प्रेरणा जागृत हुयी । आदरणीय

पितृतुल्य गुरूवर्य एवं माऊली महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. जी.एन. चिट्टे जी ने मुझे यूजीसी द्वारा नियोजित लघू शोध परियोजना के संदर्भ में जानकारी दी तथा इस योजना हेतु आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित किया । फलतः 'जंगल जहां शुरू होता है उपन्यास में चित्रित वन्यजीवनः स्वरुप एवं समस्याएँ' यह शोध - विषय निर्धारित हुआ । इस शोध-विषय के लिए यूजीसी द्वारा धनराशी प्रदान की गयी जिसके माध्यम से मुझे यह कार्य करने में सहायता मिली । इसके लिए मैं यूजीसी और हमारे प्रधानाचार्य दोनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूं ।

IV) परिकल्पना (HYPOTHESES):-

परिकल्पना प्रत्येक अनुसंधान की पहली सीढी होती है । प्रस्तुत शोध परियोजना हेतु भी परिकल्पनाएँ निम्नप्रकार से हैः-

१. आदिवासी समुदाय अभिव्यक्त हो रहा है ।
२. इस वर्ग की पीड़ा एवं संवेदनाओं को समाज के सामने रखना आवश्यक है ।
३. यह वर्ग साहित्य के मुख्य प्रवाह से जुड़ने लगा है ।
४. आदिवासी साहित्यकार अपने अधिकारों की मांग कर रहा हैं ।
५. स्वतंत्र भारत का नागरिक होने के नाते संविधान के द्वारा प्रदत्त सभी अधिकार उसे चाहिए ।
६. आदिवासी जन-जातीयों के प्रति आम जनता की संवेदनाएँ बढ रही है ।

V) शोध समस्या का मूल (Origin of the Research Problem)-

आदिवासी जन-जातीयॉ विकास से कोसों दूर है । हम केवल उन्हें साहित्य में ही पढ़ रहे है । किंतू कथाकार संजीव ने अपने ग्यारह वर्ष के अनुसंधान के पश्चात 'जंगल जहां शुरू होता है' इस उपन्यास का सृजन किया । इस उपन्यास के केंद्र में भले ही जंगल है किंतु जंगल के भी अपने कुछ नियम होते है, उसकी भी अपनी एक विशिष्ट पहचान है आदि बातों को यहां स्पष्ट किया गया है । प्रस्तुत लघू शोध परियोजना के माध्यम से हमें यह दिखायी दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने-आप को सिद्ध करने के लिए एक मौका मिलना चाहिए । उससे पहले उसे वे सभी सुविधाएँ दी जाए जो आम जनता को दी जाती है ।

आदिवासी भी भारत का निवासी है । भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त सभी अधिकार उसे भी देने चाहिए । इस उपन्यास के माध्यम से लेखक संजीव ने यही बताने की कोशीश की है कि जन्म से कोई व्यक्ति अपराधी नहीं होता बल्कि परिस्थिति एवं प्रशासन उसे अपराध के रास्ते

पर उतरने पर मजबूर कर देते है । जिनके हाथों में कलम चाहिए वे बंदूक उठाने पर मजबूर क्यूं होते हैं आदि प्रश्नों के उत्तर इस उपन्यास के माध्यम से मिल जाते है ।

VI) आंतरविद्याशाखीय अनुबंध (Interdisciplinary Relevance)-

साहित्य एवं भाषा का अध्ययन यह केवल साहित्यिक ही नहीं होता बल्कि उसमें समाज एवं देश की धर्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ-साथ विज्ञान एवं मनोविज्ञान के अनेक संदर्भों का अंतरभाव होता ही है । इस दृष्टी से मेरा यह अनुसंधान केवल भाषा एवं साहित्य तक ही सीमित न रहते हुए इसमें समाजशास्त्रीय, अर्थशास्त्रीय, राजनीति, इतिहास, दर्शन आदि ज्ञानशाखाओं के अनेक बिंदुओं पर भी विचार किया गया है ।

VII) शोध विषयपर हुए अनुसंधान का परामर्शः-
(Review of Research and Development in the Subject)

हिंदी आदिवासी साहित्य बहुत व्यापक है । प्रस्तुत लेखक के साहित्य पर अनेक विश्वविद्यालयों में अनुसंधान चल रहा है फिर भी केवल 'जंगल जहां शुरू होता है' उपन्यास में चित्रित वन्यजीवनः स्वरूप एवं समस्याएँ' इस विषय तक ही मेरा अनुसंधान सीमित है । इसलिए यह एक नया विषय एवं दृष्टीकोन मैने अपनाया है ।

VIII) आंतरराष्ट्रीय स्तर (International Status)-

हिंदी आदिवासी साहित्य ने विश्वपटल पर अपना नया अध्याय लिखा है । विश्वभर की तमाम ऐसी उपेक्षित जातीयॉ एवं वर्ग आज खुलकर अपने अनुभव लिख रहा है । साथ ही कथाकार संजीव भले ही आदिवसी न हो किंतु आदिवासी क्षेत्र में उन्होंने अपने जीवन के सुनहरे पल बिताए है । अपने अनुभव उनके साहित्य में झलिभांती दिखायी देते है । अतः इस अनुसंधान के माध्यम से अनेवाली पीढ़ी को एवं अनुसंधानकर्ताओं को अवश्य मार्ग मिलेगा ।

IX) राष्ट्रीय स्तर (National Status)-

राष्ट्रीय स्तर की यदी हम बात करते है तो आज अनुवाद ने सभी भाषायी बंधनों को तोड़ दिया है । प्रत्येक भारतीय भाषा का साहित्य समृद्ध है । आदिवासी समुदाय की अनेक बोली भाषा है जिनमें से बोड़ो, संथाली आदि बोली भाषाओं में आदिवासी समुदाय अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर रहा है । हिंदी भाषा में भी रचनाकार आदिवासी समुदाय को लेकर बात कर रहे है । इस दृष्टी से इस अनुसंधान का महत्व वर्णनातीत है ।

X) शोध विषय की उपयोगिता (Signification of the study)-

प्रस्तुत अनुसंधान में संजीव के 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास के माध्यम से हिंदी साहित्य में चित्रित आदिवासी विमर्श का अध्ययन किया गया है | इस अनुसंधान के माध्यम से

भारतीय आदिवासी जन जातीयों का अध्ययन कर उनकी मूल समस्याओं का विश्लेषण किया है| महाराष्ट्र के सीमावर्ती क्षेत्र जैसे, जलगांव जिले के पाल, नंदूरबार जिले के काकेरपाडा, नांदेड जिले के किनवट और गोंदिया जिले के सालेकसा आदि आदिवासी बहुल प्रदेशों में जंगलों में अधिवास कर रहे भिल्ल, गोंड, पावरी आदि अदिवासी समुदाय से हम जा कर मिले है । उनसे बातचित भी की है । प्रश्नावली के माध्यम से उनकी दिनचर्या, रहन-सहन, प्रशासन एवं सरकार के प्रति उनकी भावनाओं को जानने-समझने की कोशीश की । जिससे हिंदी साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन और वास्तव में आदिवासी जीवन इनकी तुलना करने में सहायता हुई |

मैंने इस अनुसंधान के माध्यम से कुछ सुझाव दिये है, जिसके माध्यम से आदिवासीयों की समस्याओं को दूर करने हेतु सरकार द्वारा जो विभिन्न योजनाएँ बानाई जाती है उनमें बदलाव भी लाया जा सकता है | आदिवासीयों की उन्नति के लिए रोजगार के विभिन संसाधनों का निर्माण किया जा सकता है । ऐसा करने से जंगल, जंगल संस्कृति और प्रशासन इनमें समन्वय प्राप्त होने में सहायता होगी | इस दृष्टि से यह अनुसंधान महत्वपूर्ण है और साथ ही आनेवाले समय में जो छात्र इस विषय पर अध्ययन करते हैं तो उन्हें भी यह अनुसंधान उपयोगी सिद्ध होगा |

XI) उद्देश्य (OBJECTIVES):-

प्रस्तुत अनुसंधान के निम्नलिखित उद्देश्य थे, जिनके माध्यम से अध्ययन किया गया है...

1. 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में चित्रित जंगल संस्कृति का अध्ययन करना |
2. पर्यावरणीय दृष्टि से जंगल का महत्व स्पष्ट करना |
3. उपन्यास में चित्रित आदिवासी जन-जातीयों का विश्लेषण करना |
4. उपन्यास में चित्रित जंगल तथा आदिवासीयों का आपसी अंत: संबंध स्पष्ट करना |
5. उपन्यास के माध्यम से जंगल संस्कृति तथा आदिवासी जन जातीयों के संवर्धन एवं उनके विकास की रूपरेखा स्पष्ट करना |
6. आदिवासीयों की समस्याओं को अधोरेखित करना |
7. आदिवासीयों की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना |
8. उपन्यास में चित्रित जंगल, आदिवासी और प्रशासन के त्रिकोण पर चर्चा करना |
9. इस त्रिकोण के आपसी संबंध को सुधारणे हेतु उपायों को प्रस्तुत करना |

XII) अनुसंधान पद्धति (METHODOLOGY):-

प्रस्तुत अनुसंधान का वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, समाजशास्त्रिय, प्रत्यक्ष भेंट आदि अनुसंधान पध्दतियों के माध्यम से अध्ययन किया गया है ।

XIII) शोध विषय की रूपरेखा (OUT LINE OF THE WORK):-

'जंगल जहां शुरू होता है' उपन्यास का केंद्रीय पात्र मुख्य रूप से जंगल ही है | इस उपन्यास की कथाभूमी पश्चिमी चंपारण क्षेत्र है जिसे मिनी चंबल भी कहा जाता है | यह जंगल रात में खूंखार और रहस्यमय हो जाता है तो दिन के उजाले में मासूम और उजला | उपन्यास की कथावस्तु पुलीस अधिकारी कुमार से शुरू होती है, जिसमें आगे चलकर मलारी, राजनेता, मास्टर मुरली पांडे, काली, परेमा, परशूराम आदि महत्वपूर्ण पात्रों के माध्यम से और अधिक रोचक हो जाती है | उपन्यास की भाषा अपने उद्देश्य को सफल बनाने में सहाय्यक सिद्ध हुई है । प्रस्तुत संशोधन के माध्यम से संजीव के 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में चित्रित वन्यजीवन के साथ-साथ आदिवासी जनजातीयों की त्रासदीयों का अनुशिलन कर कुछ तथ्य एवं सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं |

अनुसंधान की दृष्टी से इस शोध परियोजना को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर अनुसंधान करने के पश्चात निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये है ।

१. प्रथम अध्याय: 'संजीव-व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

इस अध्याय में संजीव का संक्षेप में जीवन परिचय देकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्पष्ट किया गया है । जिसमें उनके व्यक्तिगत जीवन को स्पष्ट कर उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं का अध्ययन किया गया है । साथ ही उनके द्वारा लिखित उपन्यास, कहानी साहित्य आदि के नाम दिये है ।

२.व्दितीय अध्यायः 'जंगल जहाँ शुरू होता है उपन्यास की पृष्टभूमि एवं कथावस्तु'

इस अध्याय में 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास की पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया है । कथावस्तु के माध्यम से उपन्यास को विभिन्न कोनों से देखकर तथ्य प्रस्तुत किये है । सन् 2000 में प्रकाशित संजीव द्वारा लिखित 'जंगल जहाँ शुरू होता है' एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। जिसमें थारु आदिवासियों के जीवन-संघर्ष और सामाजिक-आर्थिक त्रासदीयों को उजागर किया है । यह उपन्यास लेखक की खोजी प्रवृत्ति का परिणाम है । लगभग ग्यारह वर्ष आदिवासी क्षेत्र तथा घने जंगलों में भटकते हुए संजीव ने सामग्री जूटाने का कार्य किया है । एक लेखक की हैसियत से वे लिखते है कि, 'मेरी हर रचना तब भी शोध थी, आज भी है, चाहे वह तब का 'सर्कस' उपन्यास हो या कोई कहानी या इधर के उपन्यास 'जंगल जहां शुरू होता है' और सूत्रधार।' इस उपन्यास में भले ही ऊपर से जंगल-बीहड़ के डाकुओं की समस्या नजर आती है, लेकिन इसकी पूरी पृष्ठभूमि बिहार के चंपारण जिले के थारु आदिवासियों पर केंद्रित है ।

एक बात तो तय है कि 'जंगल जहां शुरू होता है' उपन्यास में डाकू समस्या के माध्यम से उस उपेक्षित समुदाय को रखा गया है जो आज भी जंगलों में ही अपने जीवन को ढूंढ रहा है। आदिवासियों के इस संत्रास के अतिरिक्त उपन्यास में थारुओं के रीति-रिवाज, आस्था-अनास्था,

लोकजीवन एवं संस्कृति, धार्मिक संस्कार और जीवन की चुनौतियों को बहुत गहराईयों से उजागर किया है । अतः समकालीन समय में संजीव का यह उपन्यास संथाल और थारु आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक परिवेश के बहाने जीवन को विश्लेषित किया गया है जिसे अपराध की भूमि व शरणस्थली के रूप में विश्लेषित कर 'सभ्य' समाज के अन्य की 'शत्रु' छवि में ढाला जाता है ।

स्पष्ट है कि तथाकथित सभ्य समाज के राजनेता और पूँजीपति आदिवासियों की आर्थिक -सामाजिक मजबूरियों का फायदा उठाकर उन्हें डाकू या नक्सली बनने को मजबूर करते हैं । जब वे डाकू या नक्सली बनते है तो उन्हीं के खिलाफ कार्यवाही करने में यही राजनेता ही सक्रीय रहते हैं । यहां तक कि डाकू जीवन से मुक्ति दिलाने का लालच देकर आदिवासी महिलाओं का शारीरिक शोषण भी किया जाता है । इस उपन्यास में मलारी और उसकी भौजाई आदि थारु आदिवासी महिलाओं के साथ इसी तरह का व्यवहार हुआ है । इसे उपन्यास में राजनेता मुरली पांडे और दूबे के जरिये प्रस्तुत किया गया है । थारु आदिवासी बिसराम, उसका भाई काली तथा अहीर जाति का परेमा आदि की डाकू बनने की प्रक्रिया के बारे में लल्लन बाबू कुमार से कहते हैं, 'अगर ई सोच के आइएगा कि हम टरेनिंग देते हैं डकैती का तो झगड़ा हो जाएगा । बेटा, टरनिंग तो ई पॉलिटिक्स देती है, तुमरे दुबेजी जैसे लोग, उनका ई समाज देता है । अतः वर्तमान समय में संजीव का यह उपन्यास थारू, संथाल, धांगड आदि कई ऐसी आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सास्कृतिक आदि पहलुओं को उजागर करता है ।

३.तृतीय अध्याय:- 'जंगल संस्कृति, आदिवासी जन-जीवन तथा प्रशासनिक अधिकारी'

इस अध्याय में 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में चित्रित जंगल संस्कृति, आदिवासी जन-जीवन तथा प्रशासनिक अधिकारी इन तीनों का अध्ययन किया है | संजीव के 'जंगल जहां शुरू होता है' उपन्यास में बिहार के बेतीया, पश्चीमी चंपारण जिसे मिनी चंबल कहा जाता है, उस क्षेत्र के बीहड़ एवं जंगल को केंद्र में रखकर कथाविस्तार किया गया है । जंगल संस्कृति की यदि बात की जाय तो बिहार एक ऐसा राज्य है जहां एक और विकास के सभी साधन है, तो दूसरी और निबिड़ जंगल ही जंगल । इन जंगलों में विभिन्न प्रकार के फूल-पौधे है । प्रत्येक पौधे की अपनी अपनी विशेषता है । दिन में मासूम दिखने वाला जंगल रात में खूंखार हो जाता है ।

भरतीय भौगोलिक पृष्ठभूमि में विविधता दिखाई देती है, जहां एक ओर पठार एवं समतल भू-भाग है तो वहीं दूसरी और पहाड़ी प्रदेश भी है । भारत के अधिकतर पहाड़ी क्षेत्र जंगलों से ही घिरे हुए है और इन जंगलों में आदीम काल से निवास कर रहा आदिवासी समुदाय भी है । जिसका समस्त जीवन ही जंगल पर ही निर्भर है । आदिवासी समुदाय की अपनी संस्कृति एवं अपनी भाषा है । प्रस्तुत उपन्यास 'जंगल जहां शुरू होता है' में भी लेखक संजीव ने

आदिवासी समुदाय की विवंचना को प्रस्तुत किया है । काली एक पढ़ा-लिखा आदिवासी युवक है किंतु परिस्थितिवश वह भी डाकू बनने पर मजबूर हो जाता है । इस पूरी प्रक्रिया में उसकी भतीजी की मृत्यू, भाभी का लैंगिक एवं शारिरिक शोषण, भाई की मृत्यू आदि सभी बाते महत्वपूर्ण है । इसके लिए आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थिति उतनी ही जिम्मेदार है जितना पुलिस प्रशासन । क्योंकि जब सीधे रास्ते से न्याय नहीं मिलता तो काली डाऊ बनने का विकल्प चुनता है । तात्पर्य यह है कि मनूष्य डाकू बनता नहीं है बल्कि परिस्थिति उसे डाकू बननेपर मजबूर करती है । हमारा संविधान कहता समता, न्याय, बंधुता की बात अवश्य करता है किंतु जिनपर संविधान की रक्षा करने का उत्तरदायित्व होता है, वही अपने उत्तरदायित्व से चूक जाते है । जिसका परिणाम यह होता है कि काली जैसे कितने ही युवा वाम मार्ग पर चले जाते है, जिनके हाथों से समाज विधायक कार्य होने चाहिए वे समाज विघातक बन जाते है ।

प्रशासनिक अधिकारियों की यदि बात की जाय तो, उपन्यास का पात्र कुमार डी.एस.पी.है, जो कि पुलिस प्रशासन का प्रतिनिधित्व करता है । उसे डाकू उन्मूलन हेतू बतौर ऑपरेशन इंचार्ज इस क्षेत्र में पोस्टींग दी जाती है । युवा कुमार इतना अधिक अनुभवी नहीं है, फिर भी वह जंगल की पार्श्वभूमि को समझने में अधिक समय न लगाते हुए बहुत ही कम समय में अपने पुलिस विभाग का नेतृत्व करता है । कुछ मात्रा में उसे विजय भी मिलती है, किंतु एक पुलिस अधिकारी होने के नाते वह भी अपने तत्व-आदर्शों के अंतर्गत रहते हुए जंगल की अजीब दासता में ही भटकता रहता है ।

४.चतुर्थ अध्यायः 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में चित्रित समस्याओं का विश्लेषण एवं समाधान

इस अध्याय में 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में चित्रित समस्याओं का विश्लेषण कर उनका समाधान करने की दृष्टि से कुछ सुझाव दिये गये है । प्रस्तुत उपन्यास में अशिक्षा, अंधश्रद्धा, गरिबी, फर्जी एनकाऊंटर, उत्पीड़न, असमानता, अपहरण, फिरौती, लैंगिक शोषण, आदि ऐसी कयी समस्याओं का वर्णन किया गया है, जिनके चलते आदिवासी समुदाय एक ओर पुलिस प्रशासन तो दूसरी ओर डाकूओं से भयभित है । इस समुदाय के पास डाकुओं के सामने झुकने से दूसरा अन्य कोई विकल्प नहीं है। पुलिस प्रशासन और डाकू इन दोनों के बीच यह समुदाय पीस रहा है, जिसे प्रशानिक रवैये के चलते सुधार एवं विकास का कोई मार्ग दिखायी ही नहीं देता ।

लेखक संजीव ने बहुत ही बारिकी से इन समस्याओं को प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्त किया है, जिन्हें जन-सामान्य देखकर भी अनदेखा कर देता है । मेरा सुझाव है कि आदिवासी समुदाय को पुलिस प्रशासन द्वारा जो भी सहायता दी जाती है वह काफी नहीं है । उनके आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान हेतु १.प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक की व्यवस्था करनी होगी । २.रोजगार की उपलब्धी आवश्यक है । ३.खेती एवं जंगल पर आधारित आर्थिक नीतियों को

बदलना चाहिए । ४.महिला एवं बाल संरक्षण कानून का पालन हो । ५.आरोग्यदायी योजनाओं एवं अस्पताल की आपूर्ति आवश्यक है । ६.कोई भी अपराधी व्यक्ति हो उसे न्यायपालिका तक पहुंचाने की व्यवस्था की जाए । ७. जाति एवं धर्म के नाम पर विद्वेष को मिटाने के लिए कार्यक्रम एवं शिक्षा की व्यवस्था की जाए । ८.डाकूओं को शरणागति हेतु प्रोत्साहित कर उन्हें आत्मसम्मान से जिने के लिए कोई व्यवसाय की व्यवस्था की जाय । ९.आदिवासी समुदाय के शाश्वत विकास हेतु कानून में प्रावधान किया जाय । १०.आदिवासी समुदाय को आत्मनिर्भर बनने हेतु रोजगार गॅरंटी कानून का पालन किया जाय । इन सुझाव के अतिरिक्त कोई अन्य सुझाव भी हो सकते है किंतु जिनके विकास के लिए कानून बनाए जा रहे है उन्हें भी इस प्रक्रिया में शामिल करने की आवश्यकता है ।

५.पंचम अध्यायः चरित्र चित्रण कला एवं भाषा शैली

इस अध्याय में 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास का औपन्यासिक साहित्य कृति की दृष्टि से अध्ययन कर चरित्र चित्रण एवं भाषा शैली को स्पष्ट किया गया है । 'जंगल जहां शुरू होता है', इस उपन्यास में जंगल को केंद्र में रखकर कथाकार संजीव ने कथावस्तु का विस्तार किया है । कथानक के अनुसार पात्रों का चयन कर प्रत्येक पात्र पाठकों को अंतर्मुख करता है । पुरूष पात्रों में डी.एस.पी. कुमार पुलिस प्रशासन का प्रतिनिधित्व करता है तो उसके साथ अन्य पुलिस कर्मचारी भी है । काली के माध्यम से पढे-लिखे आदिवासी युवक को अभिव्यक्त किया गया है । मास्टर मुरली पांडे का कार्य बहुत ही संवेदनशील है, जो ग्राम सुरक्षा दल का निर्माण कर आदर्शवादी चरित्र प्रस्तुत करता है । स्त्री पात्रों में मलारी का चरित्र चित्रण स्वाभाविक हुआ है । शोषित-पीडित आदिवासी स्त्री की व्यथा-कथा का चित्रण बखूबी से हुआ है । निष्कर्ष रुप से उपन्यास में लगभग पचास से अधिक पात्रों का संयोजन किया है । यहां कथाकार की कसौटी दिखायी देती है कि एक भी पात्र अतिरिक्त एवं बेजान नहीं दिखायी देता ।

भाषा शैली की दृष्टी से यह उपन्यास अप्रतिम है । संथाल, थारू आदि आदिवासी समुदाय के पात्रों की भाषा स्वाभाविक है । उसमें कही भी खिच-तान नहीं है । कुमार की भाषा परिनिष्ठित भाषा है जो कि एक पुलिस अधिकारी की होनी चाहिए । इसके साथ ही कही-कही अंग्रेजी शब्द एवं वाक्यों का प्रयोग भी कुमार के द्वारा किया गया है । आदिवासी लोगों की भाषा का प्रयोग वहीं कथाकार कर सकता है जो स्वयं आदिवासी हो । किंतु संजीव ने यह उत्तरदायित्व बखूबी निभाया है । उपन्यास की भाषा कही भी निरस एवं बेजान न होकर उसमें गति है ।

उपसंहारः-

उपसंहार में समस्त अनुसंधान के निष्कर्ष तथा उपयोगीता को रखा गया है ।

XIV) शोध प्रबंध की मौलिकताः-

"संजीव के जंगल जहां शुरू होता है उपन्यास में चित्रित वन्यजीवनः स्वरूप एवं समस्याए", यह मेरी अपना शोध है । प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पांच अध्यायों को विभाजित कर अंतिम अध्याय उपसंहार है जिसमें शोध का सार एवं निष्कर्ष को रखा गया है । यह शोध भविष्य में संजीव एवं आदिवासी समुदाय पर अनुसंधान करनेवाले शोधार्थियों को अवश्य लाभदायी सिद्ध होगा ।

XV) उपलब्धिः-

१. संजीव लिखित 'जंगल जहां शुरू होता है' इस उपन्यास के माध्यम से आदिवासी समुदाय का परिचय मिलता है ।
२. इस उपन्यास में जंगल की प्राकृतिक सुंदरता का बारिकी से वर्णन किया गया है ।
३. जंगल संस्कृति एवं आदिवासीयों का अटूट रिश्ता दिखायी देता है ।
४. आदिवासी समुदाय को अपने जल-जंगल-जमीन के लिए संघर्ष करना पड़ता है ।
५. आदिवासी समुदाय की अपनी अलग पहचान है ।
६. आदिवासी समुदाय अपनी अस्मिता को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे है ।
७. भौतिक सुख-सुविधाओं के अभाव में वे विकास से कोसों दूर है ।
८. अशिक्षा एवं अंधश्रद्धा के कारण सही और गलत की सोच नहीं है ।
९. आरोग्यदायी सुख-सुविधाओं का अभाव है ।
१०. निर्धनता एवं शोषण के कारण आदिवासी समुदाय उन्नति नहीं कर पा रहा है ।
११. गंदी राजनीति का शिकार हुए है ।
१२. पुलिस प्रशासन आदिवासीयों की रक्षा करने की अपेक्षा उन्हीं को दंडित करती है ।
१३. अपहरण एवं डकैती के कारण सेठ-साहुकार भी सुरक्षित नहीं है ।
१४. परशुराम जैसे डाकू जंगल में समांतर सरकार चलाते है ।
१५. अधिकतर डाकू पिछड़ी जाति के लोग है, जो कभी सेठ-साहुकारों के लठैत हुआ करते थे ।
१६. आदिवासी समुदाय बेकारी, भूखमरी, बिमारी की समस्या से ग्रस्त है ।
१७. ठेकेदारों द्वारा भ्रष्टाचार किया जाता है ।
१८. महिलाओं का व्यापार किया जाता है ।
१९. जातिगत उच-नीच एवं अस्पृश्यता की समस्या दिखायी देती है ।
२०. सीमावर्ती प्रदेशों में रहनेवाला आदिवासी समुदाय अन्याय-अत्याचार के कारण अपना देश छोड़कर पडोसी देश नेपाल में पनाह लेने के लिए मजबूर हो जाते है ।

XVI) भविष्यकालिन शोध संभावनाएँः-

शोध-विषय **"**संजीव के 'जंगल जहां शुरू होता है' उपन्यास में चित्रित वन्यजीवनः स्वरूप एवं समस्याएँ" इस विषय पर अध्ययन करते समय शोध के लिए कुछ नए विषय इस प्रकार है, जिनपर आनेवाले समय में शोध किया जा सकता है ।

१. संजीव के आदिवासी केंद्रित उपन्यासों का अनुशीलन ।
२. आदिवासी केंद्रित हिंदी उपन्यासों का अनुशीलन ।
३. हिंदी और मराठी के आदिवासी केंद्रित उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन ।
४. 'जंगल जहां शुरू होता है' उपन्यास में चित्रित पात्रों का चरित्र चित्रणः एक अनुशीलन ।
५. 'जंगल जहां शुरू होता है' उपन्यास का तात्विक विवेचन ।
६. 'जंगल जहां शुरू होता है' उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन ।

मुख्य अन्वेशक
डॉ. सतीश अर्जुन घोरपडे
अध्यक्ष हिंदी विभाग
माऊली महाविद्यालय, वडाळा